(1) हिन्दी शिक्षण, (षष्ठ-पत्र) शिक्षा शास्त्री प्रथम वर्ष

इकाई-05 दृश्य-श्रव्य सामग्री

शिक्षण को यथार्थ एवं ग्राह्य बनाने के लिए शाब्दिक उदाहरणों से भावों एवं विचारों की गूढ़ता, उपमा, रूपक या सादृश्य से काम नहीं चल पाता है। ऐसे समय में नवीन ज्ञान, भाव एवं विचार इस प्रकार प्रस्तुत किए जायें, कि उनका स्वरूप प्रत्यक्ष, स्पष्ट एवं मूर्त हो उठे। इस कारण दृश्य-श्रव्य उपकरणों की आवश्यकता पड़ती है। इन उपकरणों की सहायता से अमूर्त, जटिल एवं सूक्ष्म बातों को मूर्त, सरल एवं स्वरूपगत बनाया जा सकता है।

प्रोफेसर बेबर ने सिद्ध किया है कि ज्ञान ग्रहण की प्रक्रिया में 40% ज्ञान हमें आँखों के अनुभव से, 25% श्रवणों के माध्यम से तथा 17% स्पर्श के द्वारा प्राप्त करते हैं। अत: ज्ञान के प्रत्यक्षीकरण एवं उसे मूर्तता प्रदान करने के लिए शैक्षिक उपकरणों की आवश्यकता एवं महत्त्व स्वतः सिद्ध है, जिनके माध्यम से वस्तु, क्रिया, भाव एवं विचार का बिम्बग्रहण सम्भव हो सके।

दृश्य-श्रव्य साधनों का अर्थ — इन साधनों का सम्बन्ध छात्रों के कानों एवं आँखों से अर्थात् सुनने व देखने से है। इसी कारण इन्हें दृश्य-श्रव्य उपकरण कहते हैं। ज्ञान एवं अनुभव के लिए चक्षु एवं श्रवण प्रमुख ज्ञानेन्द्रियाँ हैं। शिक्षण के समय में नवीन बातों को सिखाने या नवीन अनुभव प्रदान करने के लिए ऐसे उदाहरणों की आवश्यकता पड़ती है। इसी कारण रूसो, पेस्टालाजी आदि ने वस्तुओं के साक्षात् एवं प्रत्यक्ष अनुभव के आधार पर पढ़ाने की प्रणाली का प्रतिपादन किया है।

दृश्य-श्रव्य साधनों के प्रकार —

(1) दृश्य उपकरण:—

(i) वास्तविक पदार्थ, नमूने, टेबुल, मॉडल आदि।

(ii) चित्र, रेखाचित्र, डायग्राम, मानचित्र, ग्लोब, पोस्टर चार्ट आदि।

Scanned by CamScanner

(2)

(iii) मैजिक लैण्टर्न, चित्र विस्तारक यन्त्र (एपिडायस्कोप)
(iv) श्यामपट्ट। अभिनय आदि।

(2) श्रव्य उपकरण:-

(i) रेडियो, ग्रामोफोन, टेपरेकार्डर, रिकार्ड प्लेयर।

(3) दृश्य-श्रव्य उपकरण:-

(i) चल-चित्र, (ii) टेलिविजन।

दृश्य-श्रव्य साधनों के उद्देश्य एवं उनका महत्व

(i) पाठ्यवस्तु को सार्थक एवं बोधगम्य बनाने के लिए।
(ii) शिक्षण के समय में छात्रों को अधिगम के लिए प्रेरित करना।
(iii) विषयवस्तु को रोचक एवं प्रभावपूर्ण बनाने के लिए दृश्य-श्रव्य उपकरण लाभदायक हैं।
(iv) पठित एवं अनुभूत ज्ञान को सुदृढ़ करने के लिए दृश्य-श्रव्य साधन उपयोगी होते हैं।
(v) हिन्दी पढ़ने के लिए रुचि विकसित करने के लिए विशेष महत्व है।
(vi) शिक्षण को प्रभावशाली बनाने एवं छात्रों को सक्रिय बनाने के लिए भी कक्षा-कक्ष की शिक्षण संस्थितियों में दृश्य-श्रव्य साधन महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
(vii) शिक्षण-प्रक्रिया को सरल, सजीव, सुग्राह्य बनाने के लिए दृश्य-श्रव्य उपकरण आवश्यक होते हैं।
(viii) दृश्य-श्रव्य उपकरण बालकों को कल्पना करने, भाव प्रकट करने और विचार करने के लिए उत्प्रेरित करते हैं।

Scanned by CamScanner

③ दृश्य-श्रव्य सामग्री का प्रयोग करते समय सावधानियाँ

(I) कक्षा की स्थिति, प्रसंग एवं अवसर के अनुसार दृश्य-श्रव्य उपकरणों का चयन और प्रयोग किया जाना चाहिए।

(II) सामग्री व्यय-साध्य न हो। सुगमतापूर्वक सुलभ हो।

(III) घटना एवं क्रियाप्रधान चित्र या अन्य दृश्य सामग्री अधिक उपयोगी होती है। अनेक भावों एवं तथ्यों वाले चित्रों का चयन नहीं किया जाना चाहिए।

(IV) आवश्यकता पड़ने पर ही इन उपकरणों का प्रयोग करना चाहिए। अनावश्यक उदाहरणों का समावेश कर पाठ का कलेवर न बढ़ाया जावे।

(V) कक्षा में सामग्री रखने की उचित व्यवस्था कर लेनी चाहिए। उनके प्रयोग में यथासम्भव छात्रों का अधिक से अधिक सहयोग लेना चाहिए।

(VI) एक ही सामग्री विशेषतः, चित्रादि को बार-बार नहीं दिखाना चाहिए।

(VII) प्रयुक्त शिक्षण-सामग्री पर पर्याप्त विचार-विमर्श होना चाहिए। पाठयोजना के समय ही इन साधनों के प्रयोग की योजना एवं रूपरेखा बना लेनी चाहिए।

(VIII) दृश्य-श्रव्य साधनों का प्रयोग पाठ के प्रारम्भ मध्य और अन्त तीनों अवस्थाओं में किया जा सकता है। आरम्भ में पाठ के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न करने, मध्य में भावों की व्याख्या एवं तथ्यों को स्पष्ट करने और अन्त में पुनरावृत्ति, अभ्यास अथवा सीखे हुए ज्ञान एवं कौशल को सुदृढ़ करने के लिए इन उपकरणों का प्रयोग किया जाता है।

Scanned by CamScanner